केशाग्रशतभागस्य शतांशः सदृशात्मकः।
जीवः सूक्ष्मस्वरूपोऽयं संख्यातीतो हि चित्कणः।।

"विस्तार में केश की नोक के १०,००० वें अंश के तुल्य असंख्य आत्मकण हैं।"

इस प्रकार चिन्मय आत्मकण प्राकृत परमाणु से भी सूक्ष्म विस्तार वाला है। साथ ही, ऐसे असंख्य आत्मकण हैं। यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म आत्म-स्फुलिंग प्राकृत देह का प्रधान आधार है; औषधि के क्रियाशील तत्त्व के समान इसका प्रभाव भी सम्पूर्ण देह में व्याप्त रहता है। आत्मा का यह प्रभाव देह में चेतना के रूप में अनुभूत होता है; यही आत्मा के अस्तित्व का प्रमाण है। साधारण बुद्धि वाला भी जानता है कि चेतना-शून्य प्राकृत देह मृत हो जाती है; किसी भी प्राकृत उपचार से उसमें चेतना का फिर संचार नहीं किया जा सकता। यह प्रत्यक्ष है कि चेतना का कारण कोई प्राकृत सम्मिश्रण नहीं है, अपितु आत्मा है। **मुण्डकोपनिषद्** में आत्मा के स्वरूप का अधिक वर्णन हैः

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश।
प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन् विशुद्धे विभवत्येष आत्मा।।

"अणु विस्तार वाला आत्मा बुद्धियोग से जाना जाता है। पँचप्राणों (प्राण, अपान, व्यान, समान तथा उदान) में तैरता हुआ यह अणु-आत्मा हृदय में स्थित रहकर बद्धजीव के सम्पूर्ण शरीर में अपना प्रभाव विकीर्णित करता है। पँचप्राणों के दोषों से आत्मा के मुक्त होने पर ही उसका दिव्य स्वरूप प्रकट होता है।" (मुण्ड० ३.१.९)

हठयोग का प्रयोजन विविध आसनों के द्वारा उन पञ्चप्राणों का निग्रह करना है, जिनसे शुद्धस्वरूप आत्मा घिरा हुआ है। यह साधन लौकिक लाभ के लिए नहीं, भव-परिवेश से अणु-आत्मा की मुक्ति के लिए किया जाता है।

इस प्रकार, अणु-आत्मा का चिन्मय स्वरूप सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में स्वीकार किया गया है। वस्तुतः सुधिजनों को इसका प्रत्यक्ष अनुभव भी प्राप्त है। अतएव जो अणु-आत्मा को सर्वव्यापक विष्णुतत्त्व कहता है, वह अवश्य उन्मत्त है।

अणु-आत्मा का प्रभाव किसी एक देह में ही व्याप्त रहता है। मुण्डकोपनिषद् के अनुसार, यह अणु-आत्मतत्त्व सब जीवों के हृदय में स्थित है। संसार के वैज्ञानिकों के लिए यह सर्वथा अप्रमेय है। इसी कारण उनमें से कुछ अपनी मूर्खता का परिचय देते हुए आत्मा के स्वरूप का निराकरण तक करने का दुस्साहस कर बैठते हैं। परमात्मा के साथ अणु-जीवात्मा भी निश्चित रूप से देह के हृद्देश में विद्यमान है। शरीर की क्रिया-शक्ति का यही उद्गम-स्थान है। फेफड़ों से आक्सीजन का संवहन करने वाले कोश आत्मा से ही शक्ति प्राप्त करते हैं। इस स्थान से आत्मा के हट जाने पर संलयन के कारण रुधिर-क्रिया का निवर्तन हो जाता है। चिकित्सा विज्ञान